स्नातक स्तर पर अध्यनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

उमेश सिंह*
उपासना तिवारी*

शोध सार :

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य 'स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलना करना था। प्रस्तुत शोध कार्य के लिये शोधार्थी ने लखनऊ शहर के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0ए0 प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों (50 दिव्यांग विद्यार्थी तथा 50 सामान्य विद्यार्थीयों) का चयन किया। शोधार्थी ने विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। ऑकड़ों का संकलन करने के लिये समायोजन मापन हेतु प्रो0 डी0एन0 श्रीवास्तव तथा डा0 गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित मापनी "The Adjestment inventory (for Graduate and Post Graduate student only) का प्रयोग किया गया परिकल्पनाओं के आध ाार पर शोधार्थी द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थीयों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। ऑकड़ों के विश्लेषण के लिये स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग व सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन की तुलना के लिये C.R. द्वारा सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान से तुलना की गई।

की–वर्ड : समायोजन, दिव्यांग विद्यार्थी, सामान्य विद्यार्थी।

प्रस्तावना :

मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है और शिक्षा के द्वारा मनुष्यता आती है। सिर्फ इस वाक्य से हम यह अनुमान लगा सकते हैं, कि एक मनुष्य के जीवन में शिक्षा की कितनी भूमिका है। इसी भूमिका को स्पष्ट करते हुए जॉन लॉक महोदय ने कहा है कि "The plants are developed by cultivation and men by education" किंतु यह मनुष्य रूपी पौधा तभी पूर्ण रूप से स्वस्थ होगा।

***असिस्टेन्ट प्रोफेसर एम0एड0 विभाग डी0वी0सी0, उरई**
***एम0एड0 (छात्र)डी0वी0सी0, उरई**

अरस्तु के अनुसार –"स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।" यहां पर स्वस्थ शरीर से मेरा तात्पर्य यह है कि हमारी सभी ज्ञानइंद्रियां उचित रुप से कार्य कर रही है, जिसमें सभी शक्तियां उसके विकास के लिए तथा वातावरण से समायोजन के लिए विद्यमान है। परंतु दुर्भाग्य की बात है, कि कुछ व्यक्तियों में ज्ञानेंद्रियों के संचालन का आभाव होता है इस अभाव के कारण व्यक्ति को दिव्यांग की संज्ञा दी जाती है।

दिव्यांग बालक समाज में उपेक्षा तथा अति सहानभूति द्वारा हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं अतः बौद्धिक क्षमता से सामान्य बालकों के समान होते हुये भी अधिगम उपलब्धियों में पिछड़ जाते हैं। इन बालकों में सबसे अधिक समस्या समायोजन की है। क्योंकि यह बालक शारीरिक व मानसिक रूप से अक्षम होते हैं यह अपने विचारों संदेशो का आदान प्रदान नहीं कर पाते। यहॉ तक कि इन्हें अपने दैनिक कार्यो को करने में भी कठिनता होती है। ये बालक दूसरे बालकों के साथ बोलना चाहते हैं परन्तु उनका सहयोग न मिल पाने के कारण ये अपनी इच्छाओं का दमन करते हैं इन बालकों में सबसे अधिक समस्या रोजगार की होती है अपने अनुरूप रोजगार न मिल पाने के कारण इनमें तनाव उत्पन्न हो जाता है तथा इस प्रकार वह आक्रामक व्यवहार करने वाले तथा अपराधी हो जाते हैं इनके संगी–साथी भी कम होते हैं घर के लोग भी इनके साथ सहयोग पूर्ण व्यवहार नहीं करते तो इनकी कुंठा और सामाजिक असमायोजन का स्तर बढ़ जाता है।

कॉलेजो में भी यह बच्चे कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं ये अपनी शैक्षिक समस्याओं से अध्यापकों को अवगत नहीं करा पाते साथ ही इन्हें पढ़ने प्रक्रिया तथा ज्ञान को ग्रहण करने में कठिनाई होती है इन्हें आसानी से रोजगार भी नहीं मिल पाता अतः यह परिस्थितियॉ व्यक्ति के वातावरण के समायोजन में बाधा उत्पन्न करती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि यह जानना अति आवश्यक है कि ये बालक सामान्य बालकों से किस प्रकार समायोजित होते हैं। इसी समस्या से प्ररित होकर मेरे द्वारा यह शोधकार्य किया जा रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

व्यक्तित्व के विकास के लिए समायोजन आवश्यक है। एक समायोजित व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। अधिकांश यह देखा गया है कि जो विद्यार्थी दिव्यांग होते हैं, कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं, उनकी समस्याओं पर ध्यान न दिया जाए तो यह पिछड़ जाते हैं। परिणामतः यह विद्यार्थी कक्षा में बार–बार फेल हो जाते हैं या पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं। इसलिए आवश्यक है कि इनकी सही समय पर पहचान की जाए और उचित निर्देशन और परामर्श द्वारा इनकी समस्याओं का निराकरण किया जाए। प्रस्तुत

लघु शोध कार्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा समान्य विद्यार्थियों के समायोजन से संबंधित है। अतः हमारे लिए समायोजन का महत्व बढ़ जाता है।

व्यक्तित्व में समायोजन न होने के कारण व्यक्ति आक्रामक तथा झगड़ालू हो जाता है। परिणामतः वह विकृत स्वभाव का रूप धारण कर लेता है कभी–कभी उनके मानसिक संतुलन को इस प्रकार की धारणाओं से भारी चोट पहुंचती है। तथा यह मानसिक रोगों का शिकार हो जाते हैं। इस प्रकार इनके अंदर प्रतिभाएं होने पर भी यह उन का समुचित प्रयोग नहीं कर पाते।

शोध कार्य के आधार पर इनकी समायोजन संबंधी समस्याओं को जानकर उचित मार्गदर्शन प्रेरणा एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करके इनकी उन्नति के लिए कार्य किए जा सकते हैं। इनके द्वारा इनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होगी तथा इनकी छुपी प्रतिभाओं को समाज के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। इससे इन में आत्मविश्वास बढ़ेगा एवं हीनता की भावना समाप्त होगी तथा सामाजिक सुरक्षा की भावना आएगी। इस प्रकार इन विद्यार्थियों की क्षमताओं का प्रयोग करके इन्हे संपूर्ण समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी बनाया जा सकेगा।

समस्या कथन :

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन के चर :

1. समायोजन
2. दिव्यांग विद्यार्थी
3. सामान्य विद्यार्थी

उद्देश्य :

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन की तुलना करना।
2. स्नातक स्तर पर अध्यनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के गृह समायोजन की तुलना करना।
3. स्नातक स्तर पर अध्यनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन की तुलना करना।
4. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन की तुलना करना।
5. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन की तुलना करना।

परिकल्पना :

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के गृह समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के संवेगात्मक में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के सामाजिक में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमा :

1. वर्तमान शोध लखनऊ शहर के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
2. अध्ययन केवल स्नातक स्तर पर अध्ययन बी0ए0 प्रथम वर्ष के दिव्यांग तथा समान्य विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।
3. प्रतिदर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया जिसमें 50 विद्यार्थी दिव्यांग तथा 50 सामान्य विद्यार्थियों को लिया गया है।
4. अध्ययन को समायोजन के लिये चार क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया है।

1. गृह समायोजन
2. संवेगात्मक समायोजन
3. शैक्षिक समायोजन
4. समाजिक समायोजन

शोध अभिकल्प :

1. अध्ययन विधि –

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

2. न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध हेतु उद्देश्य पूर्ण विधि का प्रयोग कर लखनऊ शहर के 2 महाविद्यालयों के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों (50 दिव्यांग विद्यार्थी तथा 50 सामान्य विद्यार्थियों) का चयन किया गया है।

3. अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

समायोजन सूची –

प्रो0 डी0एन0 श्रीवास्तव
डॉ0 गोविन्द तिवारी

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 का परीक्षण

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	D	df	CR	सार्थकता
दिव्यांग विद्यार्थी	50	32.12	6.67	1.51	10.58	98	7.006	.01 पर सार्थक
सामान्य विद्यार्थी	50	21.54	8.35					

तालिका में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात का मान 7.006 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के क्रान्तिक अनुपात के मान 98 df पर 2.58 से अधिक है अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 2 का परीक्षण

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के गृह समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	D	df	CR	सार्थकता
दिव्यांग विद्यार्थी	50	4.38	1.96	1.33	1.7	98	5.15	.01 पर सार्थकता
सामान्य विद्यार्थी	50	2.68	1.34					

तालिका में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात का मान 5.15 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के क्रान्तिक अनुपात के मान 98 df पर 2.58 से अधिक है अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 3 का परीक्षण

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	D	df	CR	सार्थकता
दिव्यांग विद्यार्थी	50	10.48	3.73	.70	4.38	98	6.25	.01 पर सार्थकता
सामान्य विद्यार्थी	50	6.1	3.31					

तालिका में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात का मान 6.25 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के क्रान्तिक अनुपात के मान 98 df पर 2.58 से अधिक है अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 4 का परिक्षण

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के भौक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 4

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	D	df	CR	सार्थकता
दिव्यांग विद्यार्थी	50	10.54	3.13	.63	42	98	6.66	.01 पर सार्थकता
सामान्य विद्यार्थी	50	6.34	3.24					

तालिका में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात का मान 6.66 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के क्रान्तिक अनुपात के मान 98 df पर 2.58 से अधिक है अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 5 का परीक्षण

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 4.5

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	D	df	CR	सार्थकता
दिव्यांग विद्यार्थी	50	8.32	2.46	.50	2.12	98	4.24	.01 पर सार्थकता
सामान्य विद्यार्थी	50	6.2	2.62					

तालिका में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात का मान 4.24 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के क्रान्तिक अनुपात के मान 98 df पर 2.58 से अधिक है अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अध्ययन के निष्कर्ष :

1. सामान्य विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा कम है अतः सामान्य विद्यार्थी दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उत्कृष्ट श्रेणी का समायोजन रखते हैं।
2. सामान्य विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा कम है जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थी दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक समायोजन वाले होते हैं इन दोनों समूह के गृह समयोजन साख्यिकी रूप में भी सार्थक अन्तर परिलक्षित हुआ।
3. दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के संवोगात्मक समायोजन की तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थी दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च समायोजन रखते हैं।
4. दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्म्क अध्ययन करने से प्राप्त परिणामों के आधार पर पाया गया कि सामान्य विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उत्तम है। उक्त दोनों समूहों के शैाक्षिक समायोजन में संख्यिकी भिन्नता परिलक्षित हुई।
5. दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के सामाजिक सामायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर जो परिणाम प्राप्त हुये उन के आधार पर सामान्य विद्यार्थियों का समााजिक समायोजन दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। दोनों समूह में सामाजिक समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्षों की व्याख्या –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम स्वरूप यह ज्ञात हुआ है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन मे अन्तर पाया गया है। निष्कर्षों से यह भी ज्ञात होता है कि परिवार, शिक्षकों तथा सहपाठियों का पूर्ण सहयोग ना मिल पाना भी इन विद्यार्थियों के कुसमायोजित होने का एक प्रमुख कारण है। इसलिये इन बालकों में सामूहिक जीवन की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि सामूहिक जीवन बालकों में नेतृत्व तथा स्नेह की भावना का विकास करता है। इस प्रकार उक्त समूह के विद्यार्थियों के चारों क्षेत्रों, गृह, संवेगात्मक, शैक्षिक, सामाजिक, सामायोजन में अन्तर प्राप्त हुआ है। इन बालाकों के लिये

अधिक रोजगार तथा प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिये तथा आर्थिक रूप से इन्हें छूट भी दी जानी चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरोरा, संतोष. (जुलाई, 2000) : 'एडजेस्टमेंट एण्ड फैमिली क्लाइमेट ऑफ हियरिंग इम्पेयर्ड चिल्ड्रन,' इण्डियन जनरल ऑफ साकोमैट्री एण्ड एजूकेशन.
2. भार्गव, महेश (2001). :'आधुनिक मनोवैज्ञानिक एवं मापन' आगरा : भार्गव बुक हाऊस.
3. चौहान, आर0एस0 (2007). : 'बाल विकास के मनोवैज्ञानिक आधार' आगराः साहित्य प्रकाशन.
4. गुप्ता, एस0पी0 (2009).: 'आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन' इलाहावाद : शारदा पुस्तक भवन.
5. कौल, एल0 (2009), : 'शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली' नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा0लि0.
6. मिश्र, प्रेमचन्द (2007), : 'आज का विकासात्मक मनोविज्ञान' आगरा : साहित्य प्रकाशन.
7. पाठक, पी0डी0 (2011), 'शिक्षा मनोविज्ञान' आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.
8. पाठक, पी0डी0 (1992), : 'मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां' नई दिल्ली, जैनेन्द्र प्रेस.
9. सुलेमान, मुहम्मद (2007), : 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोधा विधियां, पटना : जनरल बुक एजेन्सी.
10. शर्मा, वी0एन0 (2007), : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया' आगरा : साहित्य प्रकाशन.

11- Shodhganga.inflibnet.ac.in
12- Shodhganga.Inflibnet.ac.in
13- http://www.google.co.in
14- M.B.buch sarvey